5 जुलाई 2022
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN36496

मासिक जागरण पत्रिका

नारी समान नहीं श्रेष्ठ है!

भारत में स्त्री को समान नहीं,श्रेष्ठ माना गया है, स्त्री को सभी तरह के अधिकार दिए गए है। विविध क्षेत्रो में मातृशक्ति देश का गौरव बढ़ा रही है.... पढिए जाग्रत मालवा के इस अंक में

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाए.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्त्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

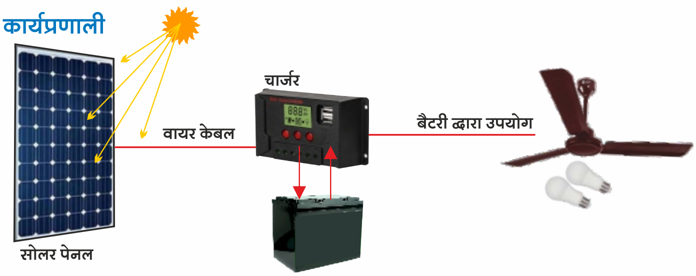

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: 1800 103 5555

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 अगस्त 2022 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN36496
वर्ष : 02 अंक : 02
...
भाद्रपद/अश्विन
युगाब्द ५१२४

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रती गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
...
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
...
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

शारदीय नवरात्रि धर्म की अधर्म पर, सत्य की असत्य पर जीत का प्रतीक है। भारतीय मान्यताओं के अनुसार इन्ही नौ दिनों में माँ दुर्गा धरती पर आती हैं, धरती को उनका मायका माना जाता है, इसी खुशी में इन दिनों नवदुर्गा का पर्व मनाया जाता है। नवदुर्गा नारीशक्ति का भी प्रतीक है। हमारे यहॉं तो कहा भी गया है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। नवदुर्गा शक्ति संचय का भी पर्व है। भगवान श्रीराम ने भी दुराचारी रावण पर विजय प्राप्त करने के लिये नौ दिन तक माँ दुर्गा की कठोर शक्ति साधना की थी। नवरात्रि की नौ रातों में तीन देवियां महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है। दसवें दिन विजय का प्रतीक दशहरा मनाया जाता है। विजयदशमी के दिन ही भगवान श्रीराम ने शक्ति साधना कर रावण को मारा था।

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक नारी को देवी का स्वरूप माना है। भारतीय दृष्टि नारी में माँ का दर्शन करती है। भारतीय परिवार मातृत्व प्रधान है। परिवार के केन्द्र में माँ का स्थान ही सर्वोच्च माना जाता है। नारी ही नारायणी है, नारी की अपनी एक गरिमा है। नारी ही पुरूष की जननि है। हम परमेश्वर के बाद सर्वाधिक ऋणी अगर हैं तो नारी के क्योंकि परमात्मा हमें जन्म देता है किन्तु मातृशक्ति नारी हमें जीने योग्य बनाती है। नारी स्नेह और सौजन्य की देवी है। वह पुरूष की निर्मात्री है। किसी भी राष्ट्र का उत्थान नारी जाति के उत्थान के बगैर असंभव है। राष्ट्र की भावी पीढ़ी का निर्माण करने वाली मातृशक्ति ही है।

भारत वर्ष तो इस राष्ट्र को ही माँ के रूप में पूजता आया है। इसलिए हमने इस राष्ट्र को भारत माता माना है। हमने इसे भौगोलिक या भौतिक रूप में नही साक्षात माता के रूप में दर्शन किए हैं। हमारा भारतवर्ष जीता जागता माता का ही स्वरूप है। हमने इस पावन वसुन्धरा को भारत माता के रूप में ही पूजा है और पूजते रहेंगे। भारत माता जिसके मस्तक का मुकुट हिमालय है, सागर जिसके चरण पखार रहा है, ऐसी जगजननि भारतमाता के चरणों में शत-शत वन्दन।

भारतमाता की जय।

समानता और अधिकारों के साथ नारी शक्ति

डॉ. सोनाली नरगुंदे

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः। भारत की आध्यात्मिक धरती पर देवता, मानव और उनमें सर्वोपरि है आदिशक्ति का स्थान। देवता भी जिनके आगे नतमस्तक है। मातृशक्ति की महानता का पर्व है नवरात्रि और देवी भगवती की उपासना का उत्सव है, नवदुर्गा की आराधना के नौ दिन। इस साल भारतभूमि और भी उत्साह से यह पर्व मनाने वाली है। दुर्गोत्सव को देश भर में अलग-अलग तरीके से मनाया जाता है। बंगाल में दुर्गा पूजा का महत्व देखने तो अनेक विदेशी सैलानी आते हैं। ऐसा ही गुजरात में होने वाले नवरात्रि पर्व के लिए पूरे देश ही नहीं विदेश से लोग गरबा में शामिल होने आते हैं। अखंड ज्योत जलाने का यह पर्व बहुत ही शक्तिसंपन्न माना जाता है। इसमें लोगों के मन में सात्विक विचार और आध्यात्मिक शक्ति दोनों ही परिलक्षित होती हैं। शक्ति की आराधना का यह काल देश में बहुत ही संयम का काल कहा जाता है। शक्ति को साधना बहुत कठिन है और ऐसे ही देश की शक्ति ने अपने आप को साध कर देश का नया स्वरूप प्रदान किया है। वैसे भी किसी भी देश अथवा साम्राज्य की संस्कृति, सभ्यता और परंपरा को संरक्षित करने और हस्तांतरित करने का जिम्मा उस स्थान की मातृशक्ति के हाथ में होता है। भारत में यह काम बहुत काल से महिलाएं सशक्त रूप से करती चली आ रही हैं।

वर्तमान में महिलाओं की स्थिति और सशक्तिकरण की बात करें तो यह साल बहुत अद्भुत है। इस वर्ष देश के सर्वोच्च पद पर ग्रामीण भारत और आम नागरिक का प्रतिनिधित्व करने वाली श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने कमान संभाली। उड़ीसा के एक गांव से निकलकर सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़कर उन्होंने राष्ट्रपति पद की बागडोर अपने हाथों में थामी है। देश के लिए सौभाग्य का विषय है कि हमारे देश में ना सिर्फ दुर्गा की पूजा की जाती है बल्कि उन्हें उनके अधिकार भी दिए जाते हैं। देश में वित्त मंत्री भी महिला हैं। मध्यप्रदेश के पंचायत और नगर निगम चुनावों में महिलाओं का वर्चस्व समानता की अलख जगाता है। नव दुर्गा की उपासना नाम की नहीं है। ऐसे ही देश का नाम रौशन करने वाली अनेक खिलाड़ी दुर्गा स्वरूपों ने पदक जीतकर देश को अग्रिम पंक्ति में खड़ा किया है। मीराबाई चानू ने भारोत्तोलन में स्वर्ण पदक, कुश्ती में साक्षी मलिक, विनेश फोगाट ने स्वर्ण जीता है। ऐसे ही टेबल टेनिस में भाविना पटेल, बॉक्सिंग में नीतु गंगा ने स्वर्ण जीता है। बैडमिंटन में पी वी संधु ने स्वर्ण और मिक्स में रजत पदक प्राप्त किया है। बॉक्सिंग में निकहत जरीन का स्वर्ण और श्रीजा अकुला ने टेबल टेनिस डबल में स्वर्ण पदक जीता है। लॉन बाल्स जैसे नवीन खेल में भी नयामोनी सेकिया, पिंकी सिंह, लवली चौबे और रूपा रानी टिर्के ने स्वर्ण पदक जीता है। भारोत्तोलन में बिंदिया रानी ने रजत और सुशीला देवी ने जूडो में रजत पदक प्राप्त किया। ऐसे ही देश की महिला क्रिकेट टीम ने रजत जीता है।

विश्व इकानॉमिक फोरम के सर्वेक्षण के अनुसार भारत लैंगिक अंतर को मिटाकर आगे की ओर बढ़ा है। देश में 2022 में महिलाओं की स्थिति को देखें तो 250 बड़ी कंपनियों का सर्वे किया गया तो ज्ञात हुआ कि इनमें सीईओ और सीएफओ जैसे पदों पर महिलाओं की संख्या बड़ी है। इनमें 55 प्रतिशत महिलाएं हैं। यह आंकड़ा विश्व के हिस्से का 24 प्रतिशत है। इस साल यह आंकड़े महिला समानता की ओर इशारा करते हैं। वर्तमान में लोकसभा में 81 महिला सांसद हैं। ऐसे ही राज्यसभा में भी महिलाओं की संख्या पिछले सालों की तुलना में बढ़ी है। देश के कैबिनेट में 11 महिलाएं हैं जो देश के लिए निर्णय लेने वाली स्थिति में हैं।

मातृशक्ति की समानता और अधिकारों की बात करें तो हमारे देश में स्थिति अन्य देशों की तुलना में ठीक है। वर्तमान में पश्चिम के देश जिस प्रकार की पारिवारिक विघटन के हालातों और तनावों को झेल रहे हैं, उससे हमारा देश बचा हुआ है। इसका कारण है हमारे परिवार की धुरी महिलाएं हैं। देश में सदैव से महिला शक्ति को आधिकारिक रूप में माना गया है। इस कारण हमारे देश की परंपरा और संस्कृति अक्षुण्ण है।

नारी सशक्तिकरण

आराधना शरण

यूं ही नहीं होती थी पूजा

प्राचीन काल की विदुषी महिलाओं के नाम याद करते ही उस समय के समाज की तस्वीर भी मुखर हो जाती है, जिसका वर्णन हमारे वेदों, स्मृतियों आदि में है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता वास करते हैं। पूजा उसी की होगी जो सभी तरह से श्रेष्ठ, सक्षम और सशक्त हो। स्त्री शक्ति संपन्न थी और समाज पर उसका सकारात्मक और सृजनात्मक प्रभाव था। 'देवता' से तात्पर्य सद्गुणों वाले इनसान से है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही नारी का स्थान सम्माननीय रहा है। अर्द्धनारीश्वर का स्वरूप इसी भारत भूमि में प्रस्तुत हुआ जो स्त्री-पुरुष के समान अधिकारों और उनके संतुलित संबंधों का परिचायक है। यहां श्रेष्ठता दिखाने की होड़ नहीं, कर्तव्य सिद्धि का गौरव है। विश्व की किसी भी संस्कृति में स्त्री और पुरुष की ऐसी महिमामंडित और गौरवपूर्ण विवेचना है? सभ्यता की शुरुआत के समय स्त्री-पुरुष की अलग-अलग कुदरती क्षमताओं और जरूरत के हिसाब से श्रम का विभाजन हुआ। स्त्री को प्रकृति ने संतानोत्पत्ति की क्षमता दी है। लिहाजा बच्चों का पालन-पोषण उससे बेहतर कोई नहीं कर सकता। इसलिए उसे घर पर रहना पड़ा और इसी क्रम में गृहस्थी की देखभाल भी उसके कंधे पर आ गई और पुरुष जीवन में संसाधन जुटाने बाहर निकलने लगा। विकास क्रम में उसकी भूमिकाएं बढ़ी और समुदाय-समाज को संवारने का काम किया। वैदिक काल की विदुषियों ने अन्न अनुसंधान से लेकर शास्त्रों को पढ़ाने और प्रशासनिक व्यवस्था तक में हाथ बंटाया।

हावी होती पाश्चात्य अवधारणा

ऋग्वेद काल में स्त्रियों को सर्वोच्च शिक्षा यानी ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने का अधिकार था। देवी सरस्वती शास्त्र और कला के क्षेत्र में नारी की निपुणता का प्रतीक हैं। वैदिक काल में परिवार के सभी कार्यों और भूमिकाओं में पत्नी को पति के समान अधिकार प्राप्त थे। शिक्षा के अलावा यज्ञ-अनुष्ठान संपन्न कराने में भी उन्हें बराबर का अधिकार प्राप्त था। भारत में कथित नारीवादी आंदोलन पश्चिमी विचारधारा से प्रभावित हुआ। ऐसे आदोलनों का नेतृत्व करने वाली महिलाएं प्राचीन ज्ञान की बजाय पश्चिम का महिमामंडन करती रहीं। उनका अभियान सृजनात्मक आयामों की व्याख्या और अमल से सर्वथा अलग होता हुआ पुरुष आलोचना आधारित हो गया। उत्तर वैदिक काल के बाद मध्यकाल और आधुनिक काल के शुरुआती दौर में महिलाओं की स्थिति शोचनीय होती चली गई। हर क्षेत्र में वे हाशिए पर धकेल दी गई। सनातन परंपरा में जिस नारी को शक्तिरुपेण, विद्यारुपेण, लक्ष्मी रुपेण माना गया, उस दर्शन और चिंतन की गरिमा धूमिल क्यों हो गई? समाज ऐसा क्यों हो गया कि स्त्री के अस्तित्व पर स्याह बादल मंडराने लगे? फिर भी, सुखद बात यह है कि जैसे अंधकार के बाद प्रकाश का उदय होता है, वैसे ही समाज संक्रमण काल से गुजर कर हमेशा जागने का प्रयास करता है। हमें वही संदेश प्रसारित करना है। सशक्त होने का अर्थ है सकारात्मक सोच और कौशल विकसित करते हुए अपने जीवन की परिस्थितियों को नियंत्रित करने की क्षमता का पोषण करना। न्याय के लिए खड़े होने का आत्मविश्वास जगाना, जिससे आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक शक्ति का विकास हो सके। जिसमें स्त्रीपुरुष दोनों की भागीदारी की दिशा तय हो। समाज का पूर्ण विकास स्त्री-पुरुष के एक साथ चलने से होगा, क्योंकि दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, प्रतिस्पर्धी नहीं। आज भारतीय समाज में स्त्रियों का सशक्तिकरण का नारा एक भावशून्य यांत्रिक प्रक्रिया है, जिसकी आंदोलना आड़ में बराबरी की बात करके स्त्रियां अपने दायित्वों से मुंह मोड़ रही हैं। सशक्त होने की प्रक्रिया यांत्रिक नहीं, एकभाव है जो उनके अंदर बसा है। यह दायित्व पूर्ति के साथ जागता है और उन्हें सशक्त बना देता है बच्चे पालना, गृहस्थी, परंपरा का पालन गुलामी और शोषण लगता है और पश्चिमी तौर-तरीके सशक्तिकरण।

अपनी प्राचीन परंपरा से भटकते हुए व्यवहार, संस्कार, विचारों के उच्च मानकों को भुलाकर पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित आचार- विचार के पोषण से सशक्त होने की राह नहीं मिल सकती। सशक्त होना है, तो उसे मूल संस्कृति का मार्ग ही अपनाना होगा। हमारे हासिल करने के धर्म शास्त्रों में वर्णित किरदारों को आप उनके शोषण के तौर पर देखते आए हैं। पर आज दृष्टि बदल कर देखें तो पाएंगे वे समाज को सुधारने के लिए उस भूमिका में चित्रित की गई और यह मजबूत और स्पष्ट संदेश दिया कि मातृ स्वरूपा नारी ही समाज और राष्ट्र के सुधार की मूल प्रेरक बल है और स्त्री की गरिमा का हनन सबसे बड़ा अपराध है।

हम सब एक हैं

हिन्दुओं में समरसता की,एकता की लकीर निरंतर बड़ी हो रही है तथा जातिवाद, भेदभाव, ऊँच-नीच, अस्पृश्यता समाप्त होते जा रहे हैं।

अमन व्यास

ये इंदौर और उज्जैन संभाग के कुछ किस्से हैं, किस्से गोगानवमी की छड़ी पूजन के हैं, इस तरह के सुखद और अनुकरणीय किस्से तो पूरे देश से अनेक सुनाई दिए पर लेकिन आप इंदौर व उज्जैन संभाग के ही कुछ किस्से इस लेख में पढ़ लीजिए और गर्व भी कीजिए कि

तोड़ने वालों की लकीर छोटी और जोड़ने वालों की लकीर बड़ी हो रही है।

वाल्मीकि समाज द्वारा होने वाली छड़ी निशान की पूजा के ऐसे अनेक किस्से आये जब कहीं ब्राह्मण परिवार ने तो कहीं राजपूत ने तो कहीं अन्य परिवार ने छड़ी पूजन अपने घर पर बुलाकर की और ये परिवार सामजिक समरसता की मिसाल बन गए।

बड़नगर में राजपूत और ब्राह्मण परिवार ने घर बुलाकर किया छड़ी पूजन

बड़नगर के शेर सिंह झाला जो राजपूत हैं और बलराम पंड्या जो ब्राह्मण हैं। जाति इसलिए बता रहा हूँ ताकि समरसता स्पष्ट हो सके, दोनों परिवारों ने वाल्मीकि समाज के बंधुओं से आग्रह किया कि उनके घर पर भगवान गोगादेव की छड़ी निशान लायी जाए वे पूजन करना चाहते है, दोनों के घर पर छड़ी लायी गयी और दोनों परिवारों ने आनंदभाव से छड़ी पूजन किया।

बड़नगर के बावीसा ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष ने घर बुलाकर किया छड़ी पूजन

राजेन्द्र जोशी जो बडवाह में बाविसा ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष हैं उन्होंने भी ऐसा ही किया, उन्होंने भी गोगादेव की छड़ी को अपने घर बुलाया और सपरिवार उसका पूजन किया इसी तरह खाचरौद में उपाध्याय परिवार ने भी अपने घर पर छड़ी पूजन की इच्छा व्यक्त की और नगर की सभी छड़ियां उनके घर लायी गईं और उनका पूजन किया गया, इसमें और भी ध्यान देने की बात यह कि उपाध्याय जी के निवास पर इस समय कई समाजों के प्रमुख भी आये और सभी ने पूजन भी की।

ऐसा बहुत सी जगह हुआ है, हो रहा है, बढ़ रहा है, सामाजिक समरसता के उत्कृष्ट उदाहरण छोटी से बड़ी सभी जगह से आ रहे हैं, इंदौर जिसको स्वच्छ करने में, बनाये रखने में वाल्मीकि समाज का बहुत बड़ा योगदान है, वह जब गोगानवमी पर छुट्टी लेता है तो इंदौर का जनसामान्य स्वयं झाडू लगाता है, यह इस बात का प्रतीक है कि हम सब एक है।

समरसता बढ़ रही है, लकीर बड़ी हो रही है, कुछ अपवाद है वो ठीक होंगे, लेकिन कुछ लोग हैं, संस्थान हैं, संगठन हैं जिन्हें ये हो गया तो बड़ी समस्या होगी इसलिए वो झूठी और छोटी-छोटी खबरों को सही जैसा बड़ा बनाकर प्रस्तुत करते हैं उनसे बचना भी है और उनके षड्यन्त्र का सच सबके सामने भी लाना है।

अपनी संस्कृति इतनी गहरी, मानो कोई सिंधु है।
हम आपस में लड़े नहीं कि हम आपस में बंधु हैं।।

साहस के प्रतीक

शंकर शाह और रघुनाथ शाह

18 सितम्बर बलिदान दिवस

❖ शंकर शाह व रघुनाथ शाह गढ़ा-मंडला के गोंड साम्राज्य से थे। दोनों पिता-पुत्र गोंड जनजाति परिवार से थे। दोनों ने अंग्रेजों की नीतियों का ऐतिहासिक प्रतिकार किया।

❖ शंकर शाह द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध एक कविता लिखने के बाद अंग्रेज भड़क उठे और पिता-पुत्र दोनों को गिरफ्तार कर लिया। दोनों को अंग्रेजों ने 18 सितम्बर, 1857 को तोप से बाँधकर उड़ा दिया।

❖ शंकर शाह और रघुनाथ शाह के संघर्ष से वनवासी क्षेत्रों में स्वतंत्रता की अलख जगी। शंकर शाह के पूर्वजों ने 1500 वर्षों तक गोंडवाना पर राज्य किया था और विदेशी प्रभाव से बचाने के लिए उनके सभी पूर्वज भी सदैव युद्धरत रहे।

❖ सन् 1776 में गढ़ा राज्य के अन्तिम शासक निजाम शाह की मृत्यु के बाद उनके दोनों पुत्रों सुमेर शाह और नरहरि शाह में राज्य को लेकर पनपे मतभेदों के कारण उनकी रियासत पर 1784 में सागर के मराठों का अधिकार हो गया। इसके बाद सुमेर शाह को जटाशंकर के किला व नरहरि शाह को खुरई के किला में कैद करके रखा गया था।

❖ गढ़ा राज्य का अस्तित्व समाप्त होने के बाद सुमेर शाह के पुत्र शंकर शाह को जबलपुर के पास मराठों द्वारा एक जागीर दे दी गयी। वहीं, इनके पुत्र रघुनाथ शाह को भी जागीर दी गई।

❖ शंकर शाह का महल पुरवा (जबलपुर के निकट गढ़ा-पुरवा) में था। उनके पास जागीर की कुल 947 बीघा जमीन थी। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के समय उनकी आयु 70 वर्ष और उनके पुत्र रघुनाथ शाह की आयु 40 वर्ष हो चुकी थी।

स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका

❖ 1857 संग्राम के दौरान शंकर शाह के नेतृत्व में जबलपुर क्रांतिकारियों का गतिविधि केन्द्र हो गया।

❖ इस बात के प्रमाण उपलब्ध हैं कि सितम्बर, 1857 के प्रारम्भ में, अंग्रेजी सेना में तैनात कुछ सैनिकों और ठाकुरों ने अंग्रेजों के विरुद्ध योजना बनाई थी और उन्हें शंकर शाह का नेतृत्व प्राप्त था। जबलपुर की 52वीं रेजीमेन्ट के कई सिपाही शंकर शाह के यहां आते रहते थे। शंकर शाह से बरखेड़ी के जगत सिंह का भी सम्पर्क हो गया था।

❖ जबलपुर की 52वीं पल्टन के कुछ सिपाही अंग्रेजों के विरुद्ध थे। पल्टन के 8-10 सैनिकों ने यूरोपियनों को मार डालने की योजना बनाई, लेकिन इसकी भनक अंग्रेज अधिकारियों को लग गई, जिसके बाद 04 सितम्बर को उन क्रांतिकारियों को बंदी बनाकर तोप से उड़ा दिया गया।

शंकर शाह और रघुनाथ शाह की गिरफ्तारी

❖ अंग्रेजों को सूचना मिली कि मुहर्रम के अंतिम दिन क्रांतिकारी हमला करने वाले हैं, जिसके बाद वे सतर्क हो गये और डिप्टी कमिश्नर ने क्रांतिकारियों की योजना के बारे में ज्यादा जानकारी हासिल करने के लिए 13 सितम्बर को फकीर के वेश में एक चपरासी भेजा और उनकी यह योजना सफल हुई, क्योंकि शंकर शाह और उनके पुत्र रघुनाथ शाह फकीर के वेश में अंग्रेजों के आदमी को पहचान नहीं पाये। उन्होंने बेझिझक अंग्रेजों के विरुद्ध बन रही अपनी योजना के बारे में जानकारी दे दी।

❖ 14 सितम्बर को डिप्टी कमिश्नर और ले. बाल्डविन 20 सवारों व 40 पुलिस के दल के साथ पुरया पहुंचे और राजा को घेर लिया। शंकर शाह, उनके पुत्र समेत 14 लोगों को बंदी बनाकर उनके घर की तलाशी हुई। वहां स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े दस्तावेज मिले।

❖ तलाशी में अंग्रेजों को उपर्युक्त कविता हाथ लगी, जिसमें अंग्रेजों के विरुद्ध संग्राम छेड़ उन्हें मार भगाने की दहाड़ थी। यह कविता राजा के पलंग के पास रेशमी थैली में से अंग्रेज अधिकारी क्लार्क को हाथ लगी थी।

❖ शंकर शाह और उनके पुत्र को बचाने की कोशिश में 52वीं रेजीमेंट के सिपाही जुट गये, जिसकी भनक अंग्रेज अधिकारी को लग गई। जिसके बाद मद्रास रेजीमेन्ट पूरी रात सशस्त्र तैनात रही। दोनों को कमिश्नर के बंगले में रखा गया। उस रात 52वीं रेजीमेन्ट लाइन में गोलियां चलीं और लाइन के पास के एक बंगले में आग लगा दी गयी। 52वीं रेजीमेन्ट के 08 सैनिक अपने शस्त्रों सहित भाग गये।

❖ अंग्रेजों ने शंकर शाह व रघुनाथ शाह को यूरोपियनों को खत्म करने की साजिश में आरोपी बनाया और ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध साजिश का मुकदमा चलाया।

❖ इसके बाद अंग्रेजों ने 18 सितम्बर को पिता-पुत्र दोनों को एक साथ तोप में बांधकर नृशंसतापूर्वक उड़ा दिया।

माधव सेवा न्यास उज्जैन

उज्जैन में महाकाल मंदिर से लगे हुए महाकाल भक्त निवास व भारत माता मंदिर को देखकर हमारे मन में इनके प्रति जिज्ञासा होती है, महाकाल भक्त निवास,भारत माता मन्दिर इत्यादि माधव सेवा न्यास द्वारा संचालित होते है. माधव सेवा न्यास बहुत से समाजसेवा के कार्य करता है, कोरोनाकाल में न्यास द्वारा की गई सेवा को सभी ने सराहा था, जानिए क्या है माधव सेवा न्यास

भारत के प्रमुख तीर्थस्थल महाकालेश्वर उज्जैन में एक प्रकल्प माधव सेवा न्यास के रूप में समाज को समर्पित है। माधव सेवा न्यास का ध्येय वाक्य 'वसुधैव कुटुंबकम्.. व सर्वे भवन्तु सुखिनः... के चिंतन पर आधारित है, न्यास के मूल उद्देश्यों में स्पष्ट रूपेण प्रतीत होता है । माधव सेवा न्यास की अवधारणा रखने से लेकर आज तक के काल में ऐसे कई कार्य किए गए जो कि समाज के कल्याण की भावना को उजागर करते हैं। राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परम पूजनीय माधव सदाशिवराव गोलवलकर के नाम पर इस न्यास को नाम दिया गया **'माधव सेवा न्यास'** ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वामित्व की लगभग 13 (तेरह) बीघा यह जमीन सन् 1932 से ही संघ के पास रही। बहुत समय तक यह निर्जन भूमि चहलकदमी के साथ-साथ, खेल मैदान के रूप में जनसामान्य के उपयोग में आने लगी । यहीं पर इस प्रांत में सबसे पहले आए संघ प्रचारक श्री दिगम्बर राव तिजारेजी ने कुछ फुटबाल खिलाड़ियों को साथ में लेकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की उज्जैन में प्रथम शाखा प्रारम्भ की । एक तरफ मैदान लोगों के आकर्षण का केंद्र बना, वहीं दूसरी ओर यहाँ संघ का कार्य प्रारम्भ हुआ। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने समाज कल्याण के कार्यों में इस भूमि का उपयोग इस उदात्त विचार से प्रारंभ किया और यह भूमि माधव सेवा न्यास को सौंप दी । वर्ष 2001 में गठित माधव सेवा न्यास द्वारा समाज के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक व स्वास्थ्य कार्य निरंतर जारी हैं ।

न्यास एंबुलेंस के माध्यम से सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य शिविर नियमित लगाता है, आवश्यकतानुसार दवाइयां भी निःशुल्क उपलब्ध कराता है । इसके अतिरिक्त चिकित्सा व रक्तदान शिविर का आयोजन, दिव्यांग व निशक्तजनों के लिए निःशुल्क व्हीलचेयर की सुविधा उपलब्ध कराना, फिजियोथेरेपी व होम्योपैथी सेंटर, वाचनालय व पुस्तकालय, ध्यान व योग प्रशिक्षण केंद्र आदि का संचालन भी किया जाता है।

न्यास द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर मलखंब प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती है। शहर के बच्चों व युवाओं के लिए मलखंब प्रशिक्षण कार्य यहां नियमित रूप से जारी है ।

माधव सेवा न्यास का बहुआयामी प्रकल्प महाकालेश्वर भक्त निवास है । 2018 में भारत माता मंदिर का लोकार्पण परम पूज्य डॉ. मोहन भागवतजी व दीदी ऋतंभरा द्वारा किया गया । न्यास को प्राप्त 13 बीघा भूमि में से न्यास ने श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए इस भूमि का बड़ा भाग श्री महाकालेश्वर मंदिर प्रबंध समिति को दान में दिया है, जिसका उपयोग दर्शनार्थियों की सुविधा के लिए किया जा रहा है। महाकाल मंदिर के समीप ही सारी सुविधाएं मिल सके इसे ध्यान में रखते हुए भारत माता मंदिर व महाकालेश्वर भक्त निवास, यात्रियों की सुविधा के लिए सुविधाघर, प्याऊ, पार्किंग स्थल का निर्माण किया गया है।

अपनी भाषा को सम्मान के साथ जीने का अधिकार

लखन रघुवंशी

भाषा हमारी संस्कृति का हिस्सा है और हमारी पहचान है। भाषा हमारे दैनिक जीवन में इतनी घुली मिली है कि कई बार हम उसके विषय में सोचते भी नहीं। भाषा को लेकर विचार या तो राजनीतिक मुद्दों के माध्यम से आता है या फिर करियर के विषय में सोचने पर। लेकिन हमें इससे अलग स्वयं यह देखना चाहिए कि मातृभाषा को लेकर हमारा व्यवहार कैसा है इसके लिए हम उन माध्यमों का चयन कर सकते हैं जो हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा है। फिल्में मनोरंजन का महत्वपूर्ण माध्यम है। बीते कुछ वर्षों का व्यवसाय देखें तो यह स्पष्ट रुप से पता चलता है कि दक्षिण भारतीय भाषाओं में बनने वाली अधिकांश फिल्मों के हिंदी रिमेक मिल जाएँगे। यही नहीं बड़े बजट की फिल्मों की हिंदी डबिंग भी बड़े स्तर पर हुई है। बाहुबली एवं हाल ही में आई आर आर आर इसके उदाहरण हैं। 600 करोड़ की लागत से बनी इस फिल्म ने 1000 करोड़ से भी अधिक का व्यवसाय किया। निर्देशकों और निर्माताओं ने भी भाषा के समीकरण को समझा है और फिल्म में क्षेत्रीय भाषा के साथ ही हिंदी में भी प्रदर्शित किया जिससे कि अधिक से अधिक दर्शक फिल्म को देख सकें। बड़े बजट के साथ बनने वाली दक्षिण भारतीय फिल्मों के निर्माता वे हैं जो मुख्य रुप से हिंदी फिल्मों के प्रोड्यूसर हुआ करते थे। इससे यह स्पष्ट रुप से समझ आता है कि मनोरंजन के लिए मातृभाषा ही प्राथमिकता है और इस प्राथमिकता को सिनेमा और टेलीविज़न ने अपने मुनाफे के लिए काफी चतुराई से इस्तेमाल किया है। बात जब शिक्षा एवं नौकरी की आती है तो यह प्राथमिकता बदल जाती है। मातृभाषा के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा को सीखने का दबाव कुछ वैसा ही है जैसे कि सबटाइटल के साथ किसी अन्य भाषा की फिल्म को देखना। जहां आधा समय दृश्य और संवादों को समझने में ही लग जाता है। उसमें वो सहजता नहीं है जो अपनी मातृभाषा के साथ है। वैश्विक अर्थव्यवस्था ने हर किसी को दूसरी या तीसरी भाषा सीखने के लिए विवश कर दिया है और इसका नुकसान हर भाषा को हुआ है। हिंदी सिनेमा की बढ़ती दर्शक संख्या बताती है कि भाषा केवल राजनीति और व्यवसाय का मुद्दा नहीं है। भाषा और मनुष्य का संबंध आत्मिक है और भावनात्मक भी। हमें चाहिए कि शिक्षा और नौकरी के अवसर भी हमें हमारी भाषा में उतने ही सहज रुप से उपलब्ध हो जितने सहज रुप से अन्य भाषाओं की फिल्में। जिससे कि शिक्षा को बोझ की तरह ढोने से मुक्ति मिले और अपनी ही भाषा में उसको सीखने का अवसर भी।

चलो, खोज निकालें...!

भारत के कुछ प्राचीन शहरों के नामों के अक्षर चौखाने में से ढूंढ निकालें

म	हा	अ	यो	ध्या	प्र	उ	ड	आ	य
म	थु	य	ग	पां	ए	त्त	भा	व	श
हा	अं	रा	डी	च	व	र	मी	ल्ल	वं
रा	य	नो	ए	सा	रे	प्र	रा	भ	त
ष्ट्र	मा	श	ष	ल	भ	हॉ	की	बै	सि
मो	झा	र	खं	ड	रे	गं	गा	दा	न्हा
क	भा	र	त	त	त्न	स्ट	सां	पो	पं
रा	म	ना	थ	को	विं	द	दि	सी	ध
ल	च्छें	अ	रा	व	ली	न्हा	प	ल	र
ओ	डि	शा	द	र	न	बं	न	ल्लु	वी

उत्तर - मथुरा, अयोध्या, द्वारिका, कांची, उज्जैन, रामेश्वरम, प्रयाग, सारनाथ, लुम्बिनी, कुशीनगर, महाबलीपुरम, कन्याकुमारी, श्रीनगर, काशी

जलझूलनी एकादशी डोल ग्यारस

डॉ. राजेश रावल

जलझूलनी एकादशी (डोल ग्यारस) वृतोत्सव का पौराणिक एवं लौकिक महत्व।

व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणा। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते ।। (यजुर्वेद 11/30)

अर्थात् व्रत को धारण करने से मनुष्य दीक्षित होता है। दीक्षा से उसे दाक्षिण्य अर्थात् दक्षता तथा निपुणता की प्राप्ति होती है । दक्षता की प्राप्ति से श्रद्धा का भाव जागृत होता है और श्रद्धा से ही सत्य स्वरूप ब्रह्म की प्राप्ति होती है। हमारे सभी व्रत उत्सव एवं पर्व संस्कार समन्वित हैं एवं संस्कार समन्वित जीवन चर्या का अंतिम लक्ष्य भगवत प्राप्ति ही होता है। जल झूलनी एकादशी (डोल ग्यारस) भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि है इसे **'पद्म एकादशी'** एवं क्योंकि इस दिन दान दक्षिणा का विशेष महत्व रहता है इसलिए इसे 'दान एकादशी' भी कहते हैं ।

कहते हैं, **'हरि अनंत, हरि कथा अनंता'** इसी प्रकार इस एकादशी के विषय में भी कई मान्यताएं है । उन्हीं मान्यताओं में से एक प्रमुख लोक मान्यता यह है कि इसी दिन माता यशोदा ने जलवां पूजन (लौकिक संस्कार) किया था । बालक के जन्म दिवस के बीस दिन के भीतर उसकी माता से किसी भी नजदीकी जलस्त्रोत पर जाकर जल देवता का पूजन-अर्चन करवाना जलवां पूजन कहलाता है। इसी दिन माता यशोदा ने कन्हैया को नये वस्त्र पहना कर उन्हें पालने में झूलाने के परंपरागत लौकिक संस्कार का निर्वहन किया था । जल पूजन के साथ ही झूला बंधन संस्कार के संपन्न होने के कारण इस एकादशी को जलझूलनी एकादशी भी कहा जाता है । अधिकांश वैष्णव मंदिरों में भगवान श्री कृष्ण को स्नान पूजन अर्चन एवं श्रृंगार के पश्चात पालकी (डोल) में बिठाकर गांव व नगर में शोभा यात्रा निकाली जाती है । इसी कारण इस एकादशी को आंचलिक क्षेत्रों में **'डोल ग्यारस'** भी कहा जाता है। इस दिन भगवान विष्णु करवट बदलते हैं, इसीलिए यह **'परिवर्तनी एकादशी'** भी कही जाती है । भगवान श्री विष्णु के वामन रुप की भी पूजा की इसी दिन की जाती है। इस व्रत को करने से व्यक्ति के सुख, सौभाग्य में बढ़ोतरी के साथ उसे वाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त होता है ।

मंदिरों में इस दिन भगवान श्री विष्णु स्वरूप श्री कृष्ण को पालकी में बिठाकर शोभा यात्रा निकाली जाती है। उनको स्नान कराया जाता है। इस एकादशी के दिन व्रत कर के भगवान श्री विष्णु जी की धूप, दीप, नैवेद्य और पुष्प आदि से पूजन की जाती है।

आंचलिक क्षेत्रों में जलझूलनी एकादशी के दिन डोल(पालकी) को श्रृंगारित कर सर्व प्रथम कुआं, सरोवर अथवा नदी के किनारे ले जाकर बाल गोपाल की पूजा अर्चना की जाती है। तत्पश्चात् जल अर्थात् वरुण देवता की पूजन के पश्चात् डोल को संपूर्ण नगर अथवा गांव में घुमाया जाता है । ग्रामीण अंचलों में घर-घर डोल में विराजमान कान्हा की पूजन होती है । छोटे बच्चों को इस पालकी के नीचे से निकालने की परंपरा है । लोक मान्यता के अनुसार इससे बच्चों को लंबी उम्र का वरदान प्राप्त होता हैं । इस अवसर पर पूजन, अर्चन, दान-दक्षिणा के साथ ही किसान अपने खेतों से पके फल लाकर भगवान को अर्पित करते हैं। पालकी यात्रा समापन के पश्चात इन्हीं फलों का प्रसाद वितरण किया जाता है । संध्या समय मंदिर में झूलानुमा पालकी को झुलाया जाता है और फिर संध्या आरती के साथ उत्सव की समाप्ति होती है ।

लोक देवता - रामदेवजी

जीवन सिंह ठाकुर

रामदेवजी - लोक देवता के रूप में पूजे जाते हैं। रामदेवजी के चरण (पगलिए) बनाने की परंपरा है। संगमरमर पर पगलिये स्थापित किये जाते हैं ''रेवड़ी वृक्ष के नीचे 2-3 फिट ऊँचा चबूतरा बना कर उस पर आला बनाकर उसमें रामदेवजी के पगलिये स्थापित करते है रेवड़ी पर श्वेत वस्त्र की रामदेवजी की ध्वजा (धजा) फहराई जाती है, जिस पर रामदेवजी के लाल कपड़े के चरण बनाए जाते हैं।''

मालवा तथा राजस्थान, निमाड़ में 'राम देवरे' तथा 'थान' व्यापक रूप से मिलते है। देवरे में उनकी आरती तथा भजन गाये जाते हैं जिसमें मजीरे, खड़ताल, तंबूरे का प्रयोग किया जाता है। रामदेवजी विचारक, अछूतोद्धारक, समानता, स्त्री सम्मान करने वाले तथा इसका प्रचार करके, सामाजिक जागरूकता को व्यापक बनाया। इस विचार ने स्वतंत्रता संग्राम में गहरी भूमिका निभाई है।

लोकदेवता रामदेवजी का जन्म संवत 1462 या 1465 है। तथा समाधि वि.सं. 1515 मानी जाती है। रामदेवजी का समय ऐसा था जब देश पर बाहरी आक्रमण हो रहे थे। समाज में जातिवाद भी फैला हुआ था। रामदेवजी ने भारतीय समाज को अध्यात्म तथा वैचारिक दृढ़ता के साथ सुधार का मार्ग प्रशस्त किया। रामदेवजी का हिन्दुओं तथा मुसलमानों में स्वीकार्य होना उनकी उच्च चारित्रिक एवं उच्च आचरण, निः स्वार्थ समाज सेवा, आध्यात्मिक ऊँचाई थी। रामदेवजी को श्रीकृष्ण का अवतार मानते हैं। इन्हें बाबा रामदेव तथा बाबा रामदेव पीर तीनों ही रूपों में पूजा जाता है। एक दोहा जन मानस में प्रचलित है।

पाबू, हडबू, राम दे, मांगलिया मेहा।
पांचों पीर पधारजो गोगा श्री जेहा।।

अलीराजपुर नहीं ''आलीराजपुर'' कहो...

ये किसी महानगर के नहीं, अपने आलीराजपुर के जोबट के मनोरम दृश्य है, लगभग 50 लाख की जनसंख्या वाले इंदौर में ऐसा कोई कार्यक्रम हो तो कोई बड़ी बात नहीं, लेकिन जोबट की जनसंख्या तो 2011 की जनगणना केअनुसार मात्र 11,976 है और उसी जोबट में जन्माष्टमी पर मटकी फोड़ का कार्यक्रम चल रहा है, किसी दल का नहीं ये जोबट के जनसामान्य का कार्यक्रम है

जोबट आलीराजपुर जिले में है, कभी आलीराजपुर के साथ एक षड्यंत्र किया गया था, विद्वान् बताते हैं कि **'आली'** किसी समय एक हिन्दू स्टेट थी, लेकिन षड्यंत्रकारियों ने **'आली'** को **'अली'** कहना प्रारम्भ कर दिया अली शब्द को धीमे जहर की तरह जनसामान्य के मन-मस्तिष्क में उतारा जाने लगा और उसी का दुष्परिणाम हुआ कि आलीराजपुर को हम सब अलीराजपुर कहने लगे और अलीराजपुर सुनते ही देश के किसी भी हिस्से का व्यक्ति इस नगर को मुस्लिम नगर समझने लगा। लेकिन रुकिए....ये आलीराजपुर के जोबट के कल मटकी फोड़ के दृश्य देख लीजिये, मनोरम हैं, मनभावन हैं, जोबट इंदौर सरीखा महानगर नहीं है, इसलिए इतने जनसैलाब का होना बहुत बड़ी और सुखद बात है और इससे भी बड़ी बात कि अब आलीराजपुर के जनसामान्य की जिव्हा से, समाचार पत्रों से, भाषणों से, नारों से अलीराजपुर शब्द उतरकर **'आलीराजपुर'** सुनाई देने लगा है।

अपने पुरातन गौरव की ओर लौटकर इस तरह के उत्सवों को सामूहिक आकर मनाना आलीराजपुर में इसलिये भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योकि निमाड़ में हिन्दुओं को कन्वर्ट करने के उद्देश्य से आने वाली ईसाई मिशनरियों का प्रवेश द्वार यही आलीराजपुर ही है और यहीं से प्रवेश कर पूरे निमाड़ में मिशनरी तन्त्र फैलाया गया है, लेकिन अब न ही आलीराजपुर को अलिराजपुर करने वाले और न ही निमाड़ में जनजातीय समाज का कन्वर्जन करने वाले सफल हो सकेंगे क्योकि आलीराजपुर का हिन्दू जाग गया है। इसलिये हम हरेक कार्य के लिए सरकारों पर आश्रित हुए बिना प्रारम्भ कर दें तो इस देश का जनसामान्य ही बहुत बड़ा परिवर्तन कर देगा बस हम यह विचार लें कि हरेक समस्या का समाधान कानून से नहीं, हमारी सामूहिक दृढ़ इच्छाशक्ति से होगा।

हल्दी एक, गुण अनेक

भारतीय संस्कृति में हल्दी एक महत्वपूर्ण वनस्पति है। इसे संस्कृत में हरिद्रा कहते हैं। हल्दी व्यंजनों का जायका बढ़ाने से लेकर शुभ एवं मांगलिक कार्यों तक में प्रयुक्त होती है। इसके अलावा हल्दी का उपयोग सौंदर्य प्रसाधन के रूप में और चिकित्सा के लिए होता है। हल्दी के चिकित्सकीय गुणों के आयुर्वेद में विविध उपयोग बताए गए हैं। हल्दी के इन चिकित्सकीय गुणों पर अब आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी काम करने लगा है और हल्दी में पाए जाने वाले तत्व करक्यूमिन के जरिए अनेक असाध्य रोगों का निदान किया जा रहा है। भावप्रकाश निघण्टु में हल्दी के चिकित्सकीय गुणों का वर्णन करते हुए लिखा है -

हरिद्रा कटुका तिक्ता रूक्षोष्णा कफपित्तनुत्।
वा त्वगदोषमेहास्रशोषपाण्डुव्रणापहा ॥185॥

यानी हल्दी चरपरी, कड़वी, रूखी, गर्म, कफ-पित्त, त्वचा के रोग, प्रमेह, रुधिरविकार, कोढ़ खुजली, सूजन, पाण्डुरोग और घाव एवं व्रणविनाशक है। हल्दी कृमिरोग, शीतपित्त, विषविकार और अपचन, राजयक्ष्मा आदि रोगों में भी लाभदायक है। हल्दी में 6 प्रतिशत प्रोटीन, 3.5 प्रतिशत खनिज तत्व, 68 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट्स और करक्यूमिन एवं विटामिन ए पाए जाते हैं। वैज्ञानिकों की तरफ से हल्दी पर किए गए शोध के अनुसार इसमें एंटीऑक्सीडेंट, एंटीइन्फ्लेमेटरी, एंटीसेप्टिक, एंटीट्यूमर, एंटी कैंसर, केलोरेटिक, एंटीमाइक्रोबियल, कार्डियोप्रोटेक्टिव (हृदय की सुरक्षा), नेफ्रोप्रोटेक्टिव (किडनी की सुरक्षा) और हेपेटोप्रोटेक्टिव (लिवर की सुरक्षा) के गुण होते हैं। अध्ययनों से पता चला है कि एक औंस करक्यूमिन 26 प्रतिशत तक मैंगनीज और 16 प्रतिशत तक आयरन की दैनिक आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम है। करक्यूमिन पोटैशियम, विटामिन बी6, विटामिन सी, फाइबर और मैग्नीशियम का एक अद्भुत स्रोत है। हल्दी में मौजूद एक सक्रिय तत्व करक्यूमिन पृथ्वी पर उपलब्ध सबसे शक्तिशाली जड़ी-बूटी है। आज, करक्यूमिन स्वस्थ और चमकदार बनाने में मदद करने के लिए मौखिक गोलियों के रूप में उपलब्ध है। पतंजलि के आचार्य बालकृष्ण के अनुसार हल्दी हमारे शरीर की प्रतिरोधक शक्ति (इम्युनिटी) को बढ़ाती है जिस वजह से तमाम तरह का संक्रामक बीमारियों से बचाव होता है। हल्दी में वात एवं कफ दोषों को कम करने वाले गुण होते हैं और यह शरीर में खून बढ़ाने मदद करती है। मधुमेह में हल्दी का सेवन बहुत ही उपयोगी माना जाता है।

विभिन्न रोगों में आराम

हल्दी की तासीर गर्म होती है। इस वजह से जुकाम में इसका सेवन करना फायदेमंद रहता है। हल्दी के उबले पानी से खांसी से आराम मिलता है। हल्दी में कफ को संतुलित करने का गुण होता है जिसके कारण यह हर प्रकार की खांसी में लाभदायक होती है। हल्दी, अजमोदा, यवक्षार और चित्रक के चूर्ण का शहद के साथ सेवन करने से गले की खराश दूर होती है। आंखों में दर्द, कंजक्टीवाइटिस होने पर या किसी तरह का संक्रमण होने, कान बहने, पायरिया और मसूड़ों के सब प्रकार के रोग में हल्दी के फायदे का विवरण है। पेट दर्द, पीलिया, बवासीर में भी हल्दी से आराम मिलता है। हल्दी में रोपण एवं शोथहर गुण होने के कारण यह हर प्रकार के घाव को भरने एवं उसकी सूजन आदि को भी ठीक करने में सहयोगी होती है।

हल्दी पर विदेशों में शोध

हल्दी के चिकित्सकीय गुणों और विभिन्न रोगों में इसके प्रभाव पर ईरान की इस्फाहान यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज और शाहरेकॉर्ड यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज के हामिद नासरी, नाजमेह साहिनफर्द समेत छह शोधकर्ताओं ने एक शोधपत्र 'टरमेरिक ए स्पाइस विद मल्टीफंक्शनल मेडिसिनल प्रॉपर्टीज' लिखा। यह शोधपत्र 2014 में जर्नल ऑफ हर्बमेड फार्मेकोलॉजी में प्रकाशित हुआ। इस शोध पत्र में हल्दी पर तब तक हुए सभी शोधों को शामिल किया गया और बताया गया कि हल्दी में पाया जाने वाला तत्व करक्यूमिन प्रदाह (इन्फ्लेमेशन), अल्सर, कैंसर, मधुमेह, और यहां तक कि एड्स से लड़ने में भी सक्षम है।

यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनॉयस में खाद्य विज्ञान एवं मानव पोषण विभाग में पोषण के प्रोफेसर एमेरिटस प्रो. कीथ सिंगलटरी के एक शोधपत्र के अनुसार विभिन्न प्रीक्लिनिकल परीक्षणों के जरिए हल्दी में हृदय रोग, गठिया, अल्जाइमर, गैस्ट्रोइंटेस्टिनल विकारों और मेटाबॉलिक सिंड्रोम के उपचार समेत कई किस्म के संभावित स्वास्थ्य लाभों को चिह्नित किया गया है। यह शोधपत्र 2020 में न्यूट्रिशन टुडे के 55वें खंड में प्रकाशित हुआ है। – **पाञ्चजन्य ब्यूरो**

अस्तिव की रक्षा आवश्यक है

डॉ. राम मनावत

जब देवराज इन्द्र ने भगवान कृष्ण को पूछा था कि आप ईश्वर हैं और मैं देव हूं तब आपने मेरी पूजा क्यों रुकवाई। तब भगवान ने बहुत ही सुंदर उत्तर दिया था। प्रभु ने कहा देवराज आप प्रकृति के देव हैं। अवनी, अम्बर, अग्नि, जल और पावक आपके अधीन हैं। इन पांच तत्वों की रक्षा केवल यज्ञ से ही हो सकती है। इसलिए मैंने गोवर्धन पूजा में भी धूप दीप के माध्यम से यज्ञ किया।

भारत वर्ष में भूमि को मां मानकर पूजा गया। भूमि को मातृभूमि कह कर उस उससे अपना संबंध बताया गया और सभ्यता में जमीन को भूमि मात्र माना गया परन्तु भारत में उसे मातृभूमि माना। प्रत्येक पवित्र कार्य में पहले भूमि पूजन किया गया।

आकाश को पवित्र मानकर उसकी वाणी को सत्य माना गया। भारत का तो संपूर्ण अध्यात्म जगत ही आकाश तत्व पर निर्भर है। हमारे यहां जगत को घट आकाश और ईश्वर को ब्रह्म आकाश माना गया। आकाश के साथ इतनी एकात्मता हमारी है।

जल को तो जीवन ही माना गया। नार का अर्थ जल ही है। नार में निवास के कारण ही विष्णु जी को नारायण कहा गया। पवित्र नदियों, सरोवरों सागर को तीर्थ माना गया।

अग्नि तत्व है तो यज्ञ है और संपूर्ण वैदिक परंपरा यज्ञ परंपरा है। अग्नि के विविध रूपों को हमने पूजा है। उन्चास प्रकार की वायु की हमारी मान्यता है। पूरे प्राणायाम की परम्परा पवन को प्राण तत्व निरूपित करती है। **प्रकृति ही हमारी संस्कृति है और संस्कृति ही प्रकृति है।**

जिस देश में वृक्षों को देव माना गया हो, नदियों को माँ माना गया हो, धरती को मातृभूमि माना गया हो, पहाड़ों को तीर्थ माना गया हो वह देश अनादिकाल से प्रकृति का पुजारी रहा है सेवक रहा है, संरक्षक रहा है, हमने उसे मां माना इसलिए दोहन किया है शोषण नहीं किया है।

प्रकृति ही ईश्वर है और ईश्वर ही प्रकृति है। हम ने विद्वतजन से सुना है भगवान अर्थात् **'भ' से भूमि 'ग' से गगन, 'वा' से वायु, 'अ' से अग्नि और 'न' से नीर।** इन पंचतत्व की उपासना ही सच्चे अर्थों में परमात्मा को प्रसन्नता प्रदान करती है। श्रेष्ठ पर्यावरण श्रेष्ठ समाज का प्रतिबिम्ब है, मनुष्यता की उपज है, मनुष्यतत्व का उद्बोधक है ओर मनुष्यतत्व की विजय ध्वजा है। इस चिंतन को हमें हरसंभव आत्मसात् करना पड़ेगा।

वैदिक युग से लेकर आज तक के भारतीय जनमानस की सृजन शीलता असंदिग्ध रूप से सदैव विमर्शकारी रही है। इसके फल स्वरूप भारतीय चिंतन को पूरे विश्व ने समय समय पर सहजता से स्वीकार किया है। आज पुनः समय निमन्त्रित कर रहा है कि हम प्रकृति संरक्षण में अग्रणी होकर सम्पूर्ण भूमण्डल का मार्गदर्शन करें।

विकृति को छोड़ चलो अपनी संस्कृति अपनाएं।
देव पुत्र हैं हम आओ अपनी प्रकृति बचायें।।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

www.jagratmalwa.com

यात्रा देवास के बछखाल गाँव की

धरती का स्वर्ग क्या हैं, जहा सब सुखी हो, रहने को अच्छा घर हो, आजीविका के साधन हो, स्वछता हो, नयनरम्य वातावरण हो, बच्चो के लिए शिक्षा की व्यवस्था हो, उपचार केंद्र हो, भेदभाव नहीं हो, छुआछूत नहीं हो, यही तो स्वर्ग है, और ये स्वर्ग है नर्मदा माई के गोद में, देवास के खातेगांव की बछखाल ग्राम पंचायत, जब हमने इस गाँव के दर्शन किये तो सबकुछ अद्भुत था, उसी यात्रा का वृतांत पढ़िए

हमने जैसे ही गाँव की और जाने वाली सड़क पर गाड़ी घुमाई तो एक भव्य द्वार जिस पर लोकदेवता तेजाजी महाराज की दिव्य प्रतिमा थी और फिर जैसे जैसे गाड़ी गाँव की और जाने लगी सड़क के दोनों और लहलहाते हुए वृक्ष मन मोह रहे थे और जैसे जैसे गाँव के निकट पहुंच रहे थे मन प्रफुल्लित होता जा रहा था, भव्य मुक्तिधाम ,जिसके बाहर सत्यवादी महाराज हरिश्चंद्र ,और उनकी पत्नी और पुत्र की प्रतिमा उस ऐतिहासिक घटना को सामने ला रहे थे जो पुराणों में वर्णित हैं। गाँव के और जाने वाले मार्ग पर सुंदर तालाब, तालाब में प्रतिमाये, पहाड़ीनुमा आकृति पर विराजित भगवान शंकर की प्रतिमा सोचने पर विवश करती है कि यदि गाँव के बाहर यह सब इतना भव्य - दिव्य है तो अंदर क्या क्या होगा। इन सभी दृश्यों पर मोहित और प्रसन्न होते हुए हमने गाँव में प्रवेश किया तो स्वछता अद्भुत थी, कही कोई कचरा नहीं था, और आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि यह गाँव प्रतिदिन मात्र दस मिनट कि सफाई में स्वच्छ हो जाता हैं, और इसके लिए कर्मचारी भी नियुक्त नहीं किये गए हैं, पिछले कई वर्षो से प्रत्येक ग्रामीण दस मिनट के लिए श्रमदान करता है और गाँव स्वच्छ हो जाता है। गाँव का सरकारी विद्यालय अद्भुत है, सरकारी स्कूलों के प्रति जो छवि हम सबके मन में हैं उससे बहुत अलग स्कूल, अद्भुत व्यवस्था आधुनिक कंप्यूटर क्लासेस, मिड डे मिल, बास्केटबाल, बैडमिंटन और कबड्डी के कोट भी हैं। पेड़ केवल गाँव की सड़क पर नहीं हैं एक एक घर के बाहर लहलहा रहे, चोराहों पर महपुरुषों की मुर्तिया हैं, भारत माता की मूर्ति और भगतसिंह की मूर्तियों के अद्भुत चौराहे है, ऐसे जैसे महानगरों तक में नहीं मिलते। इस गाँव में जो सबसे अद्भुत बात है वो बात ये हैं कि इस गाँव का कोई भी मामला पिछले लगभग एक दशक में थाने में नहीं गया, सब बड़े प्रेम से रहते है कुछ भी विवाद होता है तो सब आपस में सुलझा लेते है।

गाँव में सभी मान्यताओं के देवताओ, लोकदेवताओं के मंदिर है

गाँव में शहरों की तरह कालोनिया हैं, सामाजिक समरसता के अप्रतिम उदाहरण इस गाँव में कोई भेदभाव और छुआछूत नहीं हैं, गाँव के द्वार पर एक और परसुराम जी की प्रतिमा और दूसरी और बाबासाहेब की प्रतिमा इसका जीवंत उदाहरण हैं,

गाँव अद्भुत हैं बिलकुल स्वर्ग सरीखा.. स्वछता, सामाजिक समरसता, शिक्षा, स्वास्थ्य, पक्की सड़क, भव्य चौराहे, हरियाली, जल व्यवस्था सब कुछ अद्भुत हैं, हम दीवाली के दिन गाँव में गए थे, सूर्यास्त होने लगा था, लक्ष्मी पूजन की तयारिया जोरो पर थी, रंगोलिया बन रही थी, गायो को मेहँदी लग रही थी घर झालरों से रोशन हो रहें थे हमने स्वर्ग की दीवाली देखी है।

एक दिन आप भी बछखाल जरूर जाइए

जैविक खाद

किसान भाई, जैविक खाद की पूर्ति गोबरखाद, हरीखाद केंचुआ (वर्मा केंपोस्ट) खाद, तरल जैव घोल के साथ ही ''जीवाम्रत'' बनाकर की जा सकती है।

गोबर खाद - अच्छे सड़े हुए पके हुए गोबर के खाद में 1 से 1.5 प्रतिशत नाइट्रोजन 1-2 प्रतिशत फोस्फोरस तथा 1-1.5 प्रतिशत तक पोटाश पाया जाता है। इसकी मात्रा खेत में 10-15 टन प्रति हैक्टेयर दी जानी चाहिये। किसान के पास जो भी उपलब्ध हो वह देकर शेष तत्वों की पूर्ति रासायनिक खाद से करो गोबर खाद जल धारण क्षमता बढ़ती है। मृद्रा स्ट्रक्चर में सुधार होता है।

हरीखाद - हरीखाद मूंग, लोबिया, सनई ढेंचा से दी जाती है। इन फसलों को उगाकर फूल आने पर मिट्टी पलटने वाले हल से पलटकर मिट्टी में दबा देने से वह सड़कर खाद बन जाते हैं।

केंचुआ खाद - सुविधानुसार 10×5, 7.5×5 या 5×5 फिट आकार के चौरस शेड ईटों से बनाकर उनमें केंचुए पाले जाते है। अतः शेड को गोबर से भर देते हैं। डेढ़ से 2 माह में केंचुआ समूह गोबर को खा खाकर चाय पत्ती जैसा बारीक कर देते हैं, तब उस पदार्थ को छानकर बोरी में भरकर एकत्र कर लो। बाद में फलों के पौधों एवं सब्जियों में पौधे की उम्र अनुसार 4-6 मग या मुठ्ठी भरकर देकर खुरपी से मिला दें।

तरल जैव घोल - इफको, कृमको, एनएफएल आदि फर्टिलाइजर निर्माता कंपनियां पी.एस.बी. 12:32:16 जैविक तथा अन्य कल्चर के साथ ही सागरिका आदि केन्द्रों से व समितियों से विक्रय करती हैं। इनको पानी में (1 लीटर में 100 लीटर पानी) घोलकर स्प्रे कर दें।

जीवामृत बनाकर - जीवमृत बनाने हेतु एक 200 लीटर के ड्रम में 10 किलो गोबर 10 लीटर (गोमूत्र 1.5 किलो बेसन, 1.5 किलो गुड़ तथा 1-2 किलो खेत की मिट्टी डालकर पानी से मिलाकर (गलने तक) रखें)। ड्रम को 7-8 दिनों तक लकड़ी से 5 मिनिट रोज छड़ी की दिशा में हिलाएं।

मैंने स्वयं अनेक बार बनाकर ड्रिप द्वारा फूल के पौधे में दिया है जबरदस्त लाभ हुआ है। मैंने उक्त सभी के अलावा सरसों की खली भी 1 कि.लो प्रति ड्रम डाली थी। वेस्ट डिकेपोस्ट भी निकाले जीवामृत ड्रिप न हो तो बलिय्यों (1-2) से भी दे सकते हैं। यह शीघ्र 8-10 दिनों में तैयार करके दिया जा सकता है। अतः किसान भाईयों उपरोक्त में से कोई भी पसंद अनुसार सुविधा अनुसार खेत में पौधों में डालकर लाभ लें।

जैविक-कीटनाशक - जैविक कीट नाशक अनेक पदार्थो को मिलाकर बना सकते हैं जैसे-

1. नीम पत्ती व निबोली को उबालकर पानी को आधा हो जाने तक उबालकर , छानकर बोतल में भरकर रख लें। स्प्रे पेम में 100-125 मि.ली. डालकर स्प्रे करे कीड़े मर जायेंगे।
2. नीम-निबोली के साथ ही करंज की पत्तियां डालकर उबालकर भी बना लें। उसमें कुछ पत्तियां जर्दे की भी डाल दें। बन जाने पर स्प्रे करें।
3. गौ-मूत्र - ताजा गाय का मूत्र 100 लीटर से 125 लीटर प्रति टंकी डालकर स्प्रे करें, लाभ होगा।
4. नीम, सीताफल, करंज, धतूरा, आइपोमिया, (बेशरम) अरंडी सभी- पौधों के पत्तों में कीटनाशक गुण होता है। अतः किसान भाई उपलब्धता अनुसार पत्तों को उबालकर कीटनाशक बना लें। 100-125 लीटर (कीड़ों सेंया अनुसार गाड़ा) प्रति टंकी डालकर स्प्रे करें निश्चित ही कीड़े मरेंगे।
5. नीम पत्ती, करंज पत्ती के साथ जर्दा-चूना (1 चेमच) तथा सड़ी छाछ (तांबे या पीतल के बर्तन में 1-2 दिन रखकर) डालकर भी कीनाशक बनाकर स्प्रे करने पर फायदा हुआ है।

गणेशोत्सव

राष्ट्र जागरण का महापर्व

प्रोफेसर राजीव शर्मा

वर्तमान में भारतवर्ष में गणेश उत्सव हिंदू धार्मिक त्यौहार के रूप में मनाया जाता है पर वास्तव में यह एक राष्ट्रीय त्यौहार है क्योंकि इसके वर्तमान स्वरूप को शुरू करने के पीछे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की मंशा भारतीय जन मानस में एकता व ऊर्जा को प्रवाहित करना और अंग्रेजियत के विरूद्ध विद्रोह को संगठित करना था। तिलक ने यह सिलसिला 1893 में प्रारंभ किया था । इससे पूर्व गणेश उत्सव एक दिवसीय पारिवारिक त्यौहार था। इसका शुभारंभ शिवाजी महाराज के बाल्यकाल के समय मां जीजाबाई ने किया था। गणेशजी महाराज शिवाजी के समय उनके कुलदेवता थे। हिंदू पंचांग के अनुसार भादौ महीने की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को गणेश चतुर्थी आती है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार गणेश चतुर्थी को भगवान गणेशजी का जन्म हुआ था इसलिए इसे विनायक चौथ भी कहते हैं। चतुर्थी से चतुर्दशी तक के दस दिनों तक गणेशजी की पूजा होती है और अंतिम दिन गणेश का विसर्जन इस कामना के साथ किया जाता है कि हे विघ्नहर्ता आगामी बरस तू जल्दी से आना। हिंदू मान्यतानुसार तैंतीस कोटि देवता होते हैं । इनमें प्रथम पूज्यनीय गणपति हैं । कारण यह है कि गणेश ने माता पार्वती व पिताश्री शंकर की परिक्रमा कर दुनिया को संदेश दिया था कि मां बाप विश्व में सर्वाधिक पूज्य होते हैं । आज अपने देश में जो लोग वृद्धाश्रमों में मां बाप को छोड़ देते हैं उन्हें गणेशजी के इस कर्म से प्रेरणा लेनी चाहिये। गणेश के कान बड़े हैं मतलब सुनो अधिक। मुंह छोटा है मतलब बोलो कम। पेट बड़ा है मतलब हर तरह की बातों को पचाना सीखो। हाथ में लड्डू हैं मतलब सबको अपने कर कर्मों से मीठा व्यवहार दो । सवारी चूहे की है मतलब बड़े से बड़ा हो जाने पर भी छोटों को साथ रखो । गणेश गण के देवता हैं इसलिये गणतंत्र के नेतृत्वकर्ताओं को गणेश की तरह बुद्धि चातुर्य व संस्कारों को अपनाना चाहिये ताकि सही मायने में गणेशोत्सव को मनाये जाने की मूल भावना सर्वत्र अंगीकार हो सके ।

हिन्दी हिन्दुस्तानी है

मिसरी सी मीठी हूक लिए पानी सी लिए रवानी है।
है सुगम बोधिनी भावों की यह हिन्दी हिन्दुस्तानी है।।

वेदों की वाणी की बेटी यह सुधा ज्ञान की सरिता है।
है देवनागरी लिपि में यह विज्ञान विभूषित कविता है।।

अक्षर अक्षर का उच्चारण है दोष रहित अपवाद नहीं।
जैसा बोलो वैसा लिख लो ध्वनियों में कहीं विवाद नहीं।।

भाषाओं में सबसे न्यारी सबसे प्यारी युगवाणी है।
दुनिया की भाषा कुछ भी हो पर हिन्दी हिन्दुस्तानी है।।

रस छन्द अलंकारों से शुभ शोभित भाषा है कवियों की।
यह शब्द शक्तियों से गुम्फित गुणवती चहेती छवियों की।।

व्याकरण व्यवस्थित अनुशासित है शब्दकोश से कोष भरा।
चिन्तन मन्थन से ज्ञान कुम्भ नवनीत सार सन्तोष भरा।।

पानी सी निर्मल पावनता तो पानीदार कहानी है।।
है सुगम बोधिनी भावों की यह हिन्दी हिन्दुस्तानी है।।

इस भाषा में है प्रबल भाव हर भाषा को अपनाने का।
एकता बनाए रखने का कौटुम्बिक देश बनाने का।।

निर्जीव जीव का लिंग वचन हर क्रिया स्वयं बतलाती है।
अभिव्यक्ति सरल भावार्थ सुगम व्यवहार मृदुल समझाती है।।

धीरों वीरों विद्वानों की वाचिक वाणी वरदानी है।
है सुगम बोधिनी भावों की यह हिन्दी हिन्दुस्तानी है।।

- गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'

अनुसूचित वर्ग की युवती का मुस्लिम युवक ने किया अपहरण, लड़की के परिवार के पक्ष में आया पूरा हिन्दू समाज

देवास जिले के उदयनगर की अनुसूचित जाति की युवती का फरजान पिता सजुद्दीन ने अपहरण कर लिया। इस बाबद फरजान के विरुद्ध थाना उदयनगर देवास में अपराध दर्ज किया गया था।

उक्त घटना से आहत और आक्रोशित हिन्दू समाज ने इकट्ठा होकर विरोध प्रकट किया। दलित परिवार के पक्ष में हिन्दू समाज के लामबंद होने से क्षुब्ध हाज़ी मेहमूद ने शेरा यादव, शुभम एवम् अन्य 25 युवकों के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज करायी ।

अपहृत हिंदू युवती को आरोपी फरजान के कब्जे से आज तड़के सूरत से बरामद कर लिया गया। इनके आज शाम तक उदयनगर वापस लौटने की संभावना है। दलित युवती बीएससी प्रथम वर्ष की छात्रा है।

देर रात पुलिस और सेना के साथ संघ के स्वयंसेवकों ने भी सभाला मोर्चा

धामनोद के पास कारम डेम त्रासदी में कल सुबह से ही स्वयंसेवको ओर सेवा भारती के कार्यकर्ताओ ने मोर्चा संभाला था।

जैसे ही रात्रि में पुनः सूचना मिली, वैसे ही करीब 150 से ज्यादा स्वयंसेवक अपने घर से टार्च और दंड लेकर प्रभावित क्षेत्र में पहुंच गए। सभी स्वयंसेवको ने अलग अलग गावो में पहुंच कर मोर्चा संभाल लिया। स्वयंसेवकों ने वहा रात में ही सभी गांव खाली कराने का एवं लोगो को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाने का कार्य किया तथा धामनोद स्थित राहत स्थलों की व्यवस्था भी बनाई।

सेवा का व्रत धारा, अर्पित जीवन सारा

नीमच से आई लव जिहाद की घटना

एक बार फिर नीमच में अपनी वैवाहिक स्थिति छुपाकर शादी करने और फिर धर्म परिवर्तन के लिए दबाव बनाने का मामला सामने आया है। मामले में विश्व हिंदू परिषद के पदाधिकारियों के सहयोग से पीड़िता ने जिला पुलिस अधीक्षक को अपनी व्यथा सुनाई पश्चात, जिला पुलिस अधीक्षक सूरज कुमार वर्मा के आदेश पर महिला थाने पर प्रकरण दर्ज किया गया ।

मामले में पीड़िता ने बताया कि मैं नीमच कैंट क्षेत्र की निवासी हूं, वर्ष 2018 में मेरी मुलाकात अशरफ पिता इस्माइल खान उम्र 34 वर्ष निवासी बालाजी रोड बघाना के साथ हुई थी, अशरफ ने मुझे बताया था कि वह तलाक शुदा है उसके बाद 20.06.2021 को नीमच महावीर नगर स्थित एक घर पर कुछ कागजात पर साइन करवाये गए, जिसके बाद अशरफ ने कहा कि अपना निकाह हो चुका है इसके दो माह बाद मुझे ज्ञात हुआ कि अशरफ की पत्नी उसी के साथ रह रही है व उसका तलाक नही हुआ है फिर अशरफ ने मुझसे बल पूर्वक बोला कि तुझे धर्म बदलना पड़ेगा। मेरे मना करने पर अशरफ ने मारपीट व प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। पीड़िता ने बताया कि आरोपी उसके साथ शराब पीकर लगातार मारपीट करता था साथ ही कई बार गर्भपात भी कराया गया ।

पुलिस ने भारतीय दंड संहिता की धारा 498, 323, 294, 506 व मध्य प्रदेश धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम 2021 की धारा 3, 5 के तहत प्रकरण दर्ज कर मामला विवेचना में लिया । पीड़िता की मदद करने में विश्व हिंदू परिषद के जिला अध्यक्ष सत्यनारायण पाटीदार, जिला मंत्री लक्ष्मण राठौर, मातृशक्ति जिला संयोजिका रेखा वर्मा की महत्वपूर्ण भूमिका रही ।

महाकाल पर Zomato ने Ad बनाया, ट्विटर पर बॉयकॉट

Zomato ट्रेंड हुआ तो विज्ञापन भी हटाया और माफ़ी भी मांगी ......

जोमैटो ने ऋतिक रोशन अभिनीत विवादित विज्ञापन को हटा लिया है। इस ऐड में ऋतिक महाकाल से थाली मंगाने की बात कह रहे हैं। चारों तरफ से बहिष्कार की मांग उठने के बाद फूड डिलीवरी कंपनी ने माफी मांग ली है। ऑनलाइन फूड डिलीवरी कंपनी Zomato के एक ऐड को लेकर आम जनता में आक्रोश देखने को मिला।

हिंदुओं ने उस पर धार्मिक भावनाओं को आहत करने के आरोप लगाए। चारों तरफ से घिरे Zomato ने hashtag by-cott zomato और Hashtag रितिक रोशन मांफी मांग ट्रेंड होने के बाद माफी मांग ली है। Zomato ने ट्वीट कर ये भी जानकारी दी है कि उसने विवादित ऐड को हटा लिया है। Zomato ने माफी मांगते हुए ट्वीट किया, 'ऋतिक रोशन की भूमिका वाला विज्ञापन उज्जैन के 'महाकाल रेस्टोरेंट' से जुड़ा है न कि श्री महाकालेश्वर मंदिर से। महकाल रेस्टोरेंट उज्जैन में हमारे हाई ऑर्डर वॉल्यूम रेस्टोरेंट में से एक है और इसकि थाली को हमने अपने मेन्यू में जोड़ा है। महाकाल रेस्टोरेंट उज्जैन में अखिल भारतीय कैंम्पैन के लिए चुने गए रेस्टोरेंट में से एक था।'

कंपनी ने आगे लिखा, 'हम उज्जैन के लोगों की भावनाओं का सम्मान करते हैं और विज्ञापन को हटा लिया गया है। हम दिल से माफी मांगते हैं, क्योंकि यहां इरादा किसी की आस्था या भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं था।'

बता दें कि एक्टर ऋतिक रोशन द्वारा किये गए Zomato के एक ऐड में 'महाकाल' शब्द का इस्तेमाल किया गया है। इस ऐड में वो कह रहे हैं, 'थाली का मन किया, उज्जैन में हैं, तो महाकाल से मंगा लिया।' इस ऐड को लेकर लोगों का गुस्सा फूट पड़ा और इसके बहिष्कार की मांग उठने लगी। यही नहीं महाकाल मंदिर के पुजारियों ने भी इस पर आपत्ति जताते हुए माफी की मांग की थी। इसके बाद मध्य प्रदेश के गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि उन्होंने पुलिस को मामले की जांच करने का निर्देश दिया है। ऐसे में अब ज़ोमेटो ने ऐड के लिए माफी मांग ली है और सफाई भी दी है।

मालवा-निमाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में अमृत-महोत्सव के निमित्त निकली सेकडो तिरंगा यात्राएँ लाखो लोगों की रही सहभागिता

मंदसौर नगर में मातृशक्ति की विशाल तिरंगा यात्रा निकाली गयी

अमृत महोत्सव के अंर्तगत खरगोन में तिरंगा यात्रा व भारतमाता की भव्य आरती का आयोजन

अमृत महोत्सव के निमित्त चम्बल माता भी तिरंगामयी हुई। सुवासरा के बसई क्षेत्र मे युवाओं द्वारा मोटर बोट में तिरंगा यात्रा निकाली गई।

उच्च न्यायालय इंदौर में अधिवक्ताओं द्वारा तिरंगा यात्रा आयोजित की गई, जिसमे बड़ी संख्या में हाथ मे तिरंगा लिए अधिवक्तागण उपस्थित रहे।

ओम्कारेश्वर में नाविक बंधुओं ने माँ नर्मदा में निकाली विशाल तिरंगा यात्रा....

मनमोहक मंडलेश्वर में अमृत महोत्सव के निमित्त रेवा मैया मे तिरंगा यात्रा निकाली गई।

नीमच में स्वराज अमृत महोत्सव के निमित्त स्कूली विद्यार्थियों ने बनाई 'हर घर तिरंगा' की मनमोहक आकृति।

माँ बगलामुखी की नगरी नलखेडा में अमृत महोत्सव के निमित्त निकली तिरंगा यात्रा, मातृशक्ति और विद्यार्थी बड़ी संख्या में तिरंगा लेकर आए ।

विश्व संवाद केंद्र प्रिन्ट, इलेक्ट्रॉनिक, सोशल व वर्तमान में प्रचलित मीडिया के परिस्थितिजन्य संसाधनों के माध्यम से राष्ट्रीय विचारों, समसामयिक विषयों व घटना के विविध आयामों- जो राष्ट्रहित के लिए सर्वोपरि हों, के प्रचार-प्रसार का कार्य पूरी निष्ठा व प्रामाणिकता से करता है।

vskmalwa | www.vskmalwa.com | +91 62620 00102

पता :- जी 1, केसरदीप एवेन्यू, 72 नारायणबाग इंदौर-452007 (मध्यप्रदेश)

अक्टूबर माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. ०३ दुर्गाष्टमी, महाष्टमी व्रत
ता. ०५ विजयादशमी, दशहरा
ता. ०९ शरद पूर्णिमा, स्नानदान व्रत पूर्णिमा
ता. २२ धनतेरस, प्रदोष व्रत
ता. २३ रूप चतुर्दशी, छोटी दीपावली
ता. २४ दीपावली, केदार गौरी व्रत

बुक–पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341